पाठ्य-पुस्तक का अर्थ एवं परिभाषाएँ
(Meaning and Definitions of Text-Book)

पाठ्य-पुस्तक मानव की एक महत्त्वपूर्ण रचना है। **मनुष्य अपने अनुभवों, विचारों एवं अनुभूतियों का पुस्तक के रूप में संचय करता है।** पाठ्य-पुस्तक ज्ञान संचय का साधन है जिसका लाभ कई पीढ़ी को होता है। पुस्तकों के माध्यम से संचित ज्ञान को शिक्षक अपने छात्रों को प्रदान करता है। मानवीय ज्ञान संचय एवं संचार का साधन पुस्तक है। आज के तकनीकी एवं कम्प्यूटर युग में पुस्तकों के अतिरिक्त आधुनिक साधनों एवं माध्यमों का विकास हो रहा है। टेप-रिकॉर्डर, वीडियो-टेप, फ्लॉपी, माइक्रो फिल्म आदि का विकास हुआ है, जिसमें महापुरुषों को देखने एवं सुनने का अवसर भी मिलता है, जबकि पुस्तक के माध्यम से इनके विषय में केवल पढ़ने को मिलता है। यहाँ पर पाठ्य-पुस्तक की परिभाषाओं को दिया गया है—

हैरोलिकर के अनुसार, "*पाठ्य-पुस्तक ज्ञान, अनुभवों, भावनाओं, विचारों तथा प्रवृत्तियों व मूल्यों के संचय का साधन है।*"

हॉलक्वेस्ट के अनुसार, "*पाठ्य-पुस्तक शिक्षण क्रियाओं एवं अभिप्रायों के लिए सुव्यवस्थित चिन्तन एवं ज्ञान का लिखित रूप है।*"

हर्ल आर० डगलस के अनुसार, "*अध्यापकों के अनुभवों एवं विश्लेषण के अनुसार पाठ्य-पुस्तक पढ़ने-पढ़ाने का महत्त्वपूर्ण आधार है।*"

प्रभावशाली शिक्षक एवं शिक्षण के लिए पाठ्य-पुस्तक की अहम् भूमिका होती है। शिक्षकों को आधुनिकतम ज्ञान पुस्तकों के माध्यम से ही प्राप्त होता है।

पाठ्य-पुस्तकों की उपयोगिता
(Importance of Text-Books)

पाठ्य-पुस्तक की परिभाषाओं में भी इनकी उपयोगिता का उल्लेख किया गया है। एक अध्यापक के शिक्षण के नियोजन तथा व्यवस्था के लिए पाठ्य-पुस्तकें मुख्य साधन होती हैं। पाठ्य-पुस्तकें शिक्षण की पूरक तथा सहायक होती हैं।

बी०एस० ब्लूम के अनुसार, "*सीखने, अनुभवों के लिए समुचित परिस्थितियाँ पाठ्य-पुस्तकों से ही उत्पन्न की जाती हैं। और शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति की जाती है।*"

शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए पाठ्य-पुस्तकों की अधिक उपयोगिता होती है। यहाँ पर पाठ्य-पुस्तकों की विशेषताओं की उपयोगिता का विवेचन किया गया है—

1. पाठ्य-पुस्तकें शिक्षण प्रकरणों की सीमा को निर्धारित करती हैं तथा शिक्षक का मार्गदर्शन करती हैं।
2. पाठ्य-पुस्तक तथ्यों, प्रत्ययों एवं सूचनाओं को क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत करती हैं जिससे छात्रों के सीखने में सुविधा एवं सरलता होती है।

3. कक्षा-शिक्षण के प्रकरणों का अध्ययन करने तथा अभ्यास के लिए अवसर मिलता है। पाठ्य-पुस्तकें परिपाक का साधन हैं।
4. शिक्षण के शाब्दिक सम्प्रेरष से जो सुनने व समझने कर अवसर मिला, उसको अपने ढंग से पढ़ने और समझने का समुचित अवसर पुस्तकों से मिलता है।
5. पाठ्य-पुस्तकें अध्यापक को कक्षा में जाने से पूर्व पाठ की तैयारी करने की सुविधा प्रदान करती हैं।
6. पाठ्य-पुस्तकें अध्यापक तथा छात्रों दोनों का समय बचाती हैं, मितव्ययी होती हैं तथा इनसे अध्ययन की आदतों का विकास होता है।
7. छात्रों को कम मूल्य पर समस्त आवश्यक तथा महत्त्वपूर्ण तथ्यों की सूचनाएँ एक पुस्तक में ही एकत्रित मिल जाती हैं, जिससे उन्हें इधर-उधर भटकने की आवश्यकता नहीं होती।
8. पाठ्य-पुस्तकों के माध्यम से छात्र भी अध्ययन कर सकते हैं तथा गृह-कार्य करने में भी वे उपयोग कर सकते हैं। अध्यापक को गृह-कार्य प्रदान करने में पुस्तकें पर्याप्त सहायक हो सकती हैं।
9. पाठ्य-पुस्तकों की सहायता से एक-साथ सभी छात्रों को पढ़ाया जा सकता है। इससे पाठ्यवस्तु के सीखने-सिखाने में समरूपता रहती है।
10. छात्रों को निर्धारित पाठ्यक्रम का ज्ञान पाठ्य-पुस्तकों से होती है। वे उसे अर्जित कर सकते हैं कि वर्षभर में उन्हें कितना पढ़ना है तथा कितना वे पढ़ चुके हैं।
11. मौन अध्ययन का अभ्यास पाठ्य-पुस्तकों के द्वारा ही कराया जा सकता है। मौन अध्ययन छात्रों को स्वाध्याय की प्रेरणा देता है।
12. प्रत्येक अध्यापक मौखिक शिक्षण में निपुण नहीं हो सकता। सामान्य बुद्धि के अध्यापक के लिए पाठ्य-पुस्तकों का सहयोग आवश्यक हो जाता है।
13. शिक्षा की **डाल्टन पद्धति** एवं योजना प्रणाली में पाठ्य-पुस्तक की परम आवश्यकता होती है। बालक अपनी रुचि के अनुसार मानसिक विकास करते हैं।
14. पाठ को दोहराने का कार्य पाठ्य-पुस्तकों के बिना सम्भव नहीं है। अध्यापक द्वारा बताई गई अनेक बातें छात्र कक्षा में भूल जाते हैं, अनकी स्मरण-शक्ति इतनी तीव्र नहीं होती कि वे एक बार बात सुनकर याद कर लें। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि कक्षा में बताई गई बातों को घर पर जाकर पुनः दोहरा लें।
15. अतीत के ज्ञान का संचय पाठ्य-पुस्तकों द्वारा ही सम्भव है।
16. पाठ्य-पुस्तक के द्वारा शिक्षकों एवं छात्रों को उपयोगी एवं बहुमूल्य अनुभव प्राप्त होते हैं।
17. पाठ्य-पुस्तक में छात्रों को विषय-सामग्री के सन्दर्भ में पूर्ण निर्देशन प्राप्त होते हैं।
18. पाठ्य-पुस्तक में ज्ञान को क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत किया जाता है।
19. पाठ्य-पुस्तकें परीक्षा के समय छात्रों के लिए आवश्यक होती हैं।

पाठ्य-पुस्तकों की उपयोगिता के सम्बन्ध में कुछ विद्वानों के विचार निम्नलिखित हैं—

मैकाम्बर के अनुसार, "*आधुनिक पाठ्यक्रम में पाठ्य-पुस्तकें स्वयं साध्य बनने की अपेक्षा शिक्षा के उद्देश्य को प्राप्त करने में सहयोग देती हैं।*"

हॉर्न के शब्दों में, "*शिक्षण विधि एवं पाठ्यवस्तु के सुधार में अच्छी पाठ्य-पुस्तकों का स्थान सर्वोपरि है।*"

क्रो एण्ड क्रो के अनुसार, *"पाठ्य-पुस्तकों का सीखने-सिखाने की क्रियाओं में अन्य साधनों के साथ महत्त्वपूर्ण स्थान है।"*

क्रो एण्ड क्रो के अनुसार, *"न तो केवल पाठ्य-पुस्तक और न केवल शिक्षक, शिक्षण का सर्वोत्तम साधन है। यदि व्यक्तियों को अपने उत्तरदायित्वों को वहन करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है तो भली-भाँति चुनी हुई पाठ्य-पुस्तकों और भली-भाँति प्रशिक्षण के संयोग की आवश्यकता है।"*

पाठ्य-पुस्तकों के प्रकार एवं स्वरूप
(Types and Forms of Text-Books)

आधुनिक विचार यह है कि पाठ्य-पुस्तकें शिक्षक का स्थान ले सकती हैं। अभिक्रमित अनुदेशन इसका प्रमुख उदारण है। इस प्रकार की पाठ्य-पुस्तकों से छात्र स्वत: भी सीख सकता है। उत्तम प्रकार की पाठ्य-पुस्तकें शिक्षक तथा छात्रों को निर्देशन करती हैं और अध्ययन और अध्यापक की क्रियाओं में सहायक होती हैं। पाठ्य-पुस्तकें निम्नलिखित चार प्रकार की हाती हैं–

1. प्रचलित पाठ्य-पुस्तकें,
2. अनुभवों पर आधारित पाठ्य-पुस्तकें,
3. प्रचलित तथा अनुभवों पर आधारित पाठ्य-पुस्तकें तथा
4. अभिक्रमित-अनुदेशन पाठ्य-पुस्तकें।

इनका संक्षिप्त विवरण यहाँ पर दिया गया है–

1. प्रचलित पाठ्य-पुस्तकें : इन पुस्तकों में पाठ्यवस्तु से सम्बन्धित प्रकरणों को एक व्यवस्थित क्रम में प्रस्तुत किया जाता है। ये उदाहरण तथा अन्य साधनों से भी परिपूर्ण होती हैं। सन्दर्भ-पुस्तकों की सूची भी दी जाती है। सम्पूर्ण पाठ्यवस्तु को दिया जाता है। छात्रों को अध्ययन के बाद ऐसा लगता है कि इससे परे कुछ भी ज्ञान शेष नहीं है। छात्रों को सृजनात्मक क्षमताओं के विकास का अवसर नहीं होता है।

पाठ्यवस्तु को तार्किक क्रम में व्यवस्थित किया जाता है। छात्रों के सीखने की दृष्टि से उपयुक्त हो भी सकती है तथा नहीं भी हो सकती है। छात्रों की व्यक्तिगत भिन्नता को ध्यान में नहीं रखा जाता है।

2. अनुभवों पर आधारित पाठ्य-पुस्तकें : जिन दोषों का उल्लेख किया जाता है उनको ध्यान में रखकर अनुभवों पर आधारित पाठ्य-पुस्तकों का निर्माण किया जाता है। इन पाठ्य-पुस्तकों में व्यक्तिगत तथा सामूहिक शोध कार्यों को विशेष महत्त्व दिया जाता है। प्रत्येक अध्याय में शिक्षण बिन्दुओं को एक क्रम में दिया जाता है, जिसका तार्किक क्रम न होकर मनोवैज्ञानिक क्रम होता है जो छात्रों को सीखने में सहायक होता है। प्रकरणों से सम्बन्धित आकृतियाँ व चित्र भी दिए जाते हैं। उदाहरण छात्रों के जीवन से सम्बन्धित ही दिए जाते हैं। छात्रों को अभ्यास के लिए अवसर भी दिया जाता है। सीखने के अनुभव संश्लेषण विधि से प्रस्तुत किए जाते हैं। मूर्त चिन्तन को ही महत्त्व दिया जाता है। इसमें अमूर्त चिन्तन को अवसर नहीं देते हैं इसलिए प्रतिभाशाली छात्रों के लिए वह पाठ्य-पुस्तकें अधिक उपयोगी नहीं होती हैं।

3. प्रचलित तथा अनुभवों पर आधारित पाठ्य-पुस्तकें : इस प्रकार की पाठ्य-पुस्तकों में उपरोक्त दोनों प्रकार की पाठ्य-पुस्तकों की विशेषताओं को सम्मिलित किया जाता है। प्रत्येक अध्याय को दो खण्डों में बाँटा जाता है–प्रथम खण्ड में पाठ्यवस्तु को वर्णन के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। द्वितीय खण्ड में अभ्यास के लिए प्रश्न तथा समस्याएँ दी जाती हैं, जिन्हें छात्र गृह-कार्य के रूप में करते हैं। पाठ्यवस्तु सम्बन्धी चित्र तथा आकृतियाँ भी दी जाती हैं। छात्रों के मौलिक चिन्तन तथा सामान्यीकरण के लिए भी अवसर मिलता है।

इस प्रकार की पाठ्य-पुस्तकों का आकार बड़ा तथा मोटा हो जाता है तथा उनका मूल्य भी अधिक हो जाता है। इस प्रकार की पाठ्य-पुस्तकों को प्राथमिकता स्तर पर अधिक प्रयोग करते हैं।

पाठ्य-पुस्तक की आवश्यकता
(Need of Text-Book)

परिवर्तित विचारधाराओं के अनुसार पाठ्य-पुस्तक उतनी महत्त्वपूर्ण नहीं समझी जाती, जितनी पिछले समय में समझी जाती रही है। आधुनिक विचारधाराओं से प्रभावित कुछ शिक्षाशास्त्री तो पाठ्य-पुस्तक के बिल्कुल विरोधी हैं। ये लोग विद्यालयों में किसी भी प्रकार की पाठ्य-पुस्तक प्रचलित न करने के पक्ष में हैं। अमेरिका में इस प्रकार की विचारधाराएँ अधिक प्रचलित हुईं। पाठ्य-पुस्तकरहित विद्यालय स्थापित करने हेतु अमेरिका में अनेक प्रयोग किए गए, किन्तु नवीन विचारधाराओं से प्रभावित शिक्षाविदों के लिए यह अत्यन्त दुर्भाग्य की बात निकली कि अमेरिका में पाठ्य-पुस्तकरहित विद्यालयों की स्थापना से सम्बन्धित हुए प्रयोगों का निष्कर्ष इन शिक्षाविदों की विचारधाराओं के विपरीत निकला। इन्होंने निष्कर्ष निकाला कि विद्यालय-जीवन से पाठ्य-पुस्तक निकाली नहीं जा सकती। विद्यालयों में पाठ्य-पुस्तक की क्या आवश्यकता एवं स्थान है? इस प्रकार का उत्तर ज्ञात करने की भी भारत एवं अन्य देशों में बड़ी चेष्टाएँ की गईं और चेष्टाओं के प्रतिस्वरूप यह निष्कर्ष निकाले गए कि पाठ्य-पुस्तक विद्यालय-जीवन में बड़ा महत्त्व रखती हैं। विद्यालयों में पाठ्य-पुस्तक की आवश्यकता निम्न बिन्दुओं में स्पष्ट की जा सकती है—

(i) **टेक्स्ट बुक कमेटी ऑफ सेन्ट्रल एडवाइजरी बोर्ड ऑफ एजूकेशन** की रिपोर्ट के अनुसार, *"वर्तमान शिक्षा-प्रणाली की पाठ्य-पुस्तकविहीन अवस्था की कल्पना ठीक वैसी ही है, जैसी 'डेनमार्क के राजकुमार' के बिना 'हैलमेट' की कल्पना करना।"* (*A modern educational system without text-book is as difficult to imagine as Hamlet without the Prince of Denmark.*)

(ii) छात्रों का मानसिक विकास तथा मानसिक स्तर इतना ऊँचा नहीं होता कि वे विद्यालय में पढ़ाई गई विषय-वस्तु को एक ही बार में आत्मसात् कर सकें। उन्हें विषय-वस्तु को पुनः पढ़ना पड़ता है। उन्हें फिर कभी विषय-वस्तु को दुहराना पड़ता है। इन सब कार्यों के लिए पाठ्य-पुस्तक की आवश्यकता पड़ती है।

(iii) शिक्षकों तथा छात्रों दोनों का ही ज्ञान क्रमशः अव्यवस्थित एवं अपर्याप्त होता है। शिक्षकों को ज्ञान को व्यवस्थित करने की आवश्यकता पड़ती है तथा छात्रों को ज्ञानवर्द्धन करने की आवश्यकता पड़ती है। पाठ्य-पुस्तक इन दोनों ही व्यक्तियों की दोनों ही कार्यों में सहायता करती है।

(iv) पाठ्य-पुस्तक छात्रों को विषय-वस्तु को संकलित करने में सहायता करती है। दूसरे शब्दों में, पाठ्य-पुस्तक एक ऐसी सहायक-सामग्री है, जो छात्रों को अत्यन्त व्यवस्थित पाठ्य-सामग्री प्रस्तुत करती है।

(v) माध्यमिक शिक्षा आयोग ने भी पाठ्य-पुस्तक के महत्त्व एवं आवश्यकता को स्वीकार किया है।

(vi) परीक्षा के समय पाठ्य-पुस्तक छात्रों की बड़ी सहायता करती है।

(vii) भारत एक निर्धन देश है। यहाँ के अधिकांश विद्यालयों की आर्थिक दशा खराब है। उनके पुस्तकालय इस स्थिति में नहीं हैं कि वे एक ही विषय पर अनेक पुस्तक रख सकें। इन विद्यालयों के लिए यही हितकर है कि वे अपने पुस्तकालयों में पाठ्य-पुस्तकें रखें।

(viii) शिक्षण की भाषण-पद्धति की अपनी सीमाएँ हैं; जैसे—भाषण का प्रभाव भाषणकर्ता पर पर्याप्त मात्रा में निर्भर करता है। छात्रों के दृष्टिकोण में भी भाषण-पद्धति से केवल वही छात्र लाभ उठा

सकते हैं, जिनमें ध्यानमग्न होकर भाषण सुनने की क्षमता हो। पाठ्य-पुस्तक ऐसे छात्रों को विशेष लाभप्रद होती है, जो भाषण-पद्धति से विशेष लाभ नहीं उठा सकते।

(ix) पाठ्य-पुस्तक विषय-वस्तु को अत्यन्त तार्किक रूप से प्रस्तुत करती है। इससे विषय-वस्तु सरल तथा सुगम हो जाती है।

(x) पाठ्य-पुस्तकें कक्षा-शिक्षण के अनेक दोषों को दूर करती हैं। कक्षा-शिक्षण-प्रणाली के अन्तर्गत प्रत्येक छात्र पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान नहीं दिया जा सकता। छात्र पाठ्य-पुस्तकों की सहायता से व्यक्तिगत रुचि के अनुसार अध्ययन कर सकते हैं।

पाठ्य-पुस्तक के उपयोग
(Uses of Text-Book)

अध्यापक पाठ्य-पुस्तक का उपयोग निम्नलिखित कार्यों के लिए कर सकता है—

1. अन्वेषणात्मक अध्ययन (Exploratory Reading) : पाठ्य-पुस्तक को विषय-वस्तु से सम्बन्धित सामान्य सूचना प्राप्त करने के लिए प्रयोग किया जा सकता है। अध्ययन की किसी इकाई को प्रारम्भ में प्रारम्भिक सूचनाएँ प्राप्त करने में पाठ्य-पुस्तक का प्रयोग करना पड़ता है। पाठ्य-पुस्तक से आधारभूत सामान्य सूचनाएँ प्रदान कर विषय-वस्तु की पृष्ठभूमि भी तैयार की जा सकती है। *"The text-book can be used as a point for departure in the early stages of new unit to help the children to find out what it's all about and to establish a common background of basic information for all pupils."*—**Social Studies in Elementry Education** यदि पाठ्य-पुस्तक इस प्रकार प्रयोग की जाए तो इससे छात्रों को प्रमुख विचार (Key Ideas) ग्रहण करने की सुविधा रहती है। यदि पाठ्य-पुस्तक का प्रयोग इस कार्य हेतु किया जाता है तो अध्यापक को निम्नांकित बातों को ध्यान में रखना चाहिए—

(i) चित्र, ग्लोब, मानचित्र, भाषण इत्यादि के द्वारा पुस्तक के आवश्यकीय अंग को पढ़ने के लिए छात्र को तैयार कीजिए।

(ii) छात्रों को उन उद्देश्यों से अवगत करा दिया जाए, जिनकी प्राप्ति हेतु छात्रों को अध्ययन करना है। 'अमुक विषय-सामगी याद कीजिए' कहना ठीक रहेगा। यह न कहा जाए कि अमुक पृष्ठ से अमुक पृष्ठ तक अध्ययन करो।

(iii) छात्रों की शब्दावली सम्बन्धी कठिनाइयों को दूर कर दीजिए।

(iv) महत्त्वपूर्ण चित्र, उदाहरणों, मानचित्रों, व्याख्यों, स्पष्टीकरणों आदि की तरफ छात्रों का ध्यान आकर्षित कर दें।

(v) अनुगामक (Follow-up) क्रियाएँ कीजिए।

(vi) जिनकी अध्ययन-क्षमता अत्यन्त दुर्बल है, उनकी तरफ विशेष ध्यान दिए जाए। तीव्र-बुद्धि बालकों को कुछ कड़ी पुस्तकें अतिरिक्त रूप से दी जाएँ।

2. इकाई से सम्बन्धित तथ्य एकत्रित करने हेतु (Securing Facts Related to the Unit) : जिस समय किसी इकाई के माध्यम से शिक्षण किया जा रहा है, तो उससे सम्बन्धित अनेक उपयोगी सूचनाएँ प्राप्त करने के लिए पाठ्य-पुस्तक का प्रयोग किया जा सकता है। यदि पाठ्य-पुस्तक का इकाई से सम्बन्धित तथ्य एकत्रित करने हेतु प्रयोग किया जा रहा है तो अध्यापक को निम्नांकित बातों को ध्यान में रखना चाहिए—

(i) सूचनाओं की उपयोगिता ज्ञात करने में छात्रों की सहायता की जाए। पुस्तक में इकाई से सम्बन्धित कौन-कौन-सी उपयोगी सूचनाएँ हैं? इसका उत्तर प्राप्त करने में छात्रों को कठिनाई हो सकती है। अध्यापक को चाहिए कि वह इन कठिनाइयों को दूर करने की चेष्टा करे।

(ii) छात्रों को विषय-वस्तु, शब्दावली, नामावली, विषयावली इत्यादि का उपयोग करना सिखाया जाए।

(iii) पुस्तक में प्रदत्त सूचनाओं की सत्यता को प्रमाणित करने हेतु अन्य साधनों से छात्रों को अवगत करा दिया जाए।

3. मानचित्र, चार्ट-ग्राफ एवं चित्रों के अध्ययन हेतु (Map, Chart-Graph or Picture Study) : पुस्तकों में अनेक मानचित्र, चार्ट, ग्राफ एवं विभिन्न प्रकार के चित्र होते हैं। ये मानचित्र, चार्ट इत्यादि नागरिशास्त्र शिक्षण में सहायक-सामग्री का कार्य करते हैं। अत: इनका प्रयोग उन सभी लाभपूर्ण कार्यों के लिए किया जा सकता है, जिनके लिए सहायक-सामग्री का प्रयोग किया जाता है। इनको प्रयोग करते समय अध्यापक को वे सभी बातें ध्यान में रखनी चाहिए, जो सहायक-सामग्री का प्रयोग करते समय रखी जाती हैं।

4. सीखने का निष्कर्ष निकालने हेतु (Summarization of Learning) : समस्त सीखे हुए ज्ञान को सार रूप में समझाने हेतु भी पाठ्य-पुस्तक का प्रयोग किया जा सकता है। पाठ्य-पुस्तक की सहायता से हम सीखे हुए ज्ञान को अत्यन्त व्यवस्थित, क्रमबद्ध तथा संगठित रूप में रख सकते हैं। इसके लिए अध्यापक को निम्नांकित बातों को ध्यान में रखना चाहिए–

(i) पहले पढ़ी हुई विषय-वस्तु से सम्बन्धित वाद-विवाद करके छात्रों को तैयार किया जाए, जिससे वे नवीन ज्ञान को प्राप्त करने के लिए प्रेरित होंगे।

(ii) शब्दावली सम्बन्धी कठिनाइयों को दूर कर दें।

(iii) मन्द गति से पढ़ने वालों की तरफ विशेष ध्यान रखा जाए।

(iv) अन्त में पूर्णतया योजित वाद-विवाद की व्यवस्था की जाए।

अच्छी पुस्तक के गुण
(Elemetns of a Good Text-Book)

पाठ्य-पुस्तक के अनेक लाभ तथा प्रयोग हैं। शिक्षण का यह सर्वोत्तम उपकरण है। यह शिक्षकों का साथी तथा छात्रों का ज्ञानदाता है। यदि पाठ्य-पुस्तक अच्छी न हो तो पाठ्य-पुस्तक की यह सभी विशेषताएँ समाप्त हो जाती हैं। इसके लिए आवश्यक है कि अच्छी पाठ्य-पुस्तक का ही प्रयोग किया जाए। अच्छी पाठ्य-पुस्तक में निम्नांकित विशेषताएँ होती हैं–

(i) अच्छी पाठ्य-पुस्तक में विषय-वस्तु का संगठन अत्यन्त मनोवैज्ञानिक विधि से किया गया होता है।

(ii) अच्छी पाठ्य-पुस्तक छात्रों को पढ़ने के लिए स्वयं ही रुचि जागृत करती है।

(iii) अच्छी पाठ्य-पुस्तक व्याख्या, उदाहरणों आदि की सहायता से विषय को सरल बनाती है।

(iv) अच्छी पाठ्य-पुस्तक में आवश्यक स्थलों पर मानचित्र, चित्र, रेखाचित्र, रेखाकृतियाँ, ग्राफ, चार्ट इत्यादि होते हैं, जो विषय-वस्तु को और भी रोचक बनाते हैं।

(v) अच्छी पाठ्य-पुस्तक की भाषा-शैली में सरलता, सरसता तथा प्रवाहशीलता का महान् गुण होता है।

(vi) अच्छी पाठ्य-पुस्तक का आकार अधिक सुविधाजनक होता है।

(vii) अच्छी पाठ्य-पुस्तक विषय-वस्तु को छात्रों के मानसिक स्तर के अनुरूप प्रस्तुत करती है।

(viii) अच्छी पाठ्य-पुस्तक चिन्तन करने हेतु नवीन विचार प्रस्तुत करती है।

(ix) अच्छी पाठ्य-पुस्तक किसी की भावनाओं को आघात नहीं पहुँचाती।

(x) अच्छी पाठ्य-पुस्तक उपयुक्त अध्यायों में विभक्त होती है और उसके अध्याय अनेक उप-खण्डों में विभक्त होते हैं। अध्यायों में विषय-वस्तु की व्याख्या हेतु आवश्यक पैराग्राफ होते हैं।

(xi) अच्छी पाठ्य-पुस्तक में विषय-सूची, शब्दावली तथा विषयावली होती है।

(xii) अच्छी पाठ्य-पुस्तक की शैली में **विशालता** (Vividness), **पूर्णता** (Fullness) तथा **स्थूलता** (Concreteness) होती है।

पाठ्य-पुस्तक का चयन
(Selection of Text-Book)

पाठ्य-पुस्तक का चयन करते समय हमें पाठ्य-पुस्तक से सम्बन्धित निम्नांकित तथ्यों को देखना चाहिए—

1. लेखक : सर्वप्रथम हमें पुस्तक के लेखक, उसकी योग्यता, अनुभव, स्थान तथा उसके दृष्टिकोण से अवगत होना चाहिए।

2. प्रकाशन : पुस्तक के प्रकाशन से सम्बन्धित सूचनाएँ देखनी चाहिए। प्रकाशक कौन है? प्रकाशन-तिथि क्या है?

3. बाह्य रचना : पुस्तक की बाह्य रचना कैसी होती है? इसके लिए हमें उसके आकार, फॉर्मेट, अक्षरों की बनावट, मूल्य, शीर्षक, पृष्ठ-संख्या, जिल्द, कागज की किस्म आदि तथ्यों को देखना चाहिए।

4. संगठन : पुस्तक में विषय-वस्तु को संगठित करने की विधि को भी देखना अत्यावश्यक है। पाठ्य-पुस्तक की सामान्य योजना, उसके अध्यायों का क्रम, सारांश आदि चीजें देखनी चाहिए।

5. प्रस्तुतीकरण : देखना चाहिए कि पुस्तक में विषय-वस्तु को किस रूप में प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुतीकरण का ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमें पुस्तक की भाषा-शैली स्थूलता, आधुनिकता, स्पष्टता आदि को देखना चाहिए।

6. सहायक सामग्री : पुस्तक में सीखने की सहायक सामग्री किस मात्रा में दी गई है, इसके लिए हमें नीचे लिखी बातें देखनी चाहिए—

(i) **उदाहरण :** उदाहरण कैसे हैं? वे कितने उपयुक्त हैं? उनमें उद्देश्यपूर्ति की कितनी क्षमता है? छात्रों को वे किस मात्रा तक प्रभावित करते हैं?

(ii) **मानचित्रादि :** कितने मानचित्र आदि दिए गए हैं? वे किस प्रकार के हैं?

(iii) **अभ्यास-प्रश्न :** पुस्तक में अभ्यास हेतु प्रश्न दिए हैं अथवा नहीं। दिए हैं तो किस प्रकार के हैं? वे छात्रों को प्रेरणा प्रदान करते हैं अथवा नहीं?

(iv) **सन्दर्भ।**

(v) **विषय-सूची, शब्दावली, विषयावली आदि।**

भारत में पाठ्य-पुस्तकें
(Text-Books in India)

भारत में पाठ्य-पुस्तकों की दशा अत्यन्त दयनीय है। पाठ्य-पुस्तकों का गिरा हुआ स्तर छात्रों का हित करने के स्थान पर पर्याप्त मात्रा में अहित करता है। इसका प्रमुख कारण है कि पाठ्य-पुस्तकों में कुछ ऐसे गुणों का अभाव होता है, जो एक पुस्तक में आवश्यकीय रूप से होने चाहिए। पुस्तकों लिखते समय लेखक अनेक बातों को ध्यान में नहीं रखते। **प्रथम**, तो लेखक ही पुस्तकों को खराब करते हैं। **द्वितीय**, काफी खराबी प्रकाशक पैदा करते हैं और अन्त में, शिक्षक रही-सही खराबी को पूरा कर देते हैं तथा इस प्रकार पुस्तकें विभिन्न दोषों से दूषित हो जाती हैं। **माध्यमिक शिक्षा आयोग** (Secondary Education

Committee Report) ने पाठ्य-पुस्तकों की दयनीय दशा का वर्णन करते हुए लिखा है, "*अधिकतर जो पुस्तकें उपस्थित तथा प्रस्तुत की जाती हैं, अत्यन्त खराब हैं—कागज साधारणतया खराब होता है, छपाई असन्तोषजनक होती है, उदाहरण देने के ढंग निम्न स्तर के हैं तथा छपाई में अनेक त्रुटियाँ होती हैं।*" (*Most of the books submitted and prescribed are poor specimens in every way—the paper is usually bad, the printing is unsatisfactory, the illustrations are poor and there are numerous printing mistakes.*)

इन बातों के अतिरिक्त पुस्तकों में विषय-वस्तु का प्रस्तुतिकरण एवं विषय-वस्तु स्वयं भी असन्तोषजनक होती है। इसका प्रमुख कारण है कि वे लेखकगण, जो पुस्तकों को व्यावसायिक दृष्टिकोण से लिखते हैं, इन्हें हम व्यावसायिक लेखक कह सकते हैं। ये व्यावसायिक लेखक अपने विषय पर तो पुस्तकें लिखते ही हैं, साथ-ही-साथ वे उस विषय पर पुस्तक लिखने पर थोड़ा भी संकोच नहीं करते, जिनके सम्बन्ध में उन्हें कुछ भी पूर्व-ज्ञान नहीं होता।

बाजार में बिकने वाली सस्ती पुस्तकों (Cheap Books) का प्रभाव पाठ्य-पुस्तकों पर पड़ता है। पाठ्य-पुस्तकें उस समय तक बाजार नहीं पकड़ सकतीं, जब तक कि सस्ती पुस्तक बाजार से न हट जाएँ। सस्ती पुस्तकों से प्रतिस्पर्द्धा करने हेतु पुस्तकों का स्तर लेखकों को गिराना पड़ता है।

प्रकाशकों की मनोवृत्ति के कारण भी पुस्तकों का स्तर गिर जाता है। प्रकाशकगण पुस्तकों के स्तर की तरफ ध्यान न देकर अपने लाभ को सर्वोपरि रखते हैं। वे इसके लिए खराब कागज लगाते हैं, प्रूफ-रीडिंग कराते नहीं हैं, जिससे अनेक त्रुटियाँ रह जाती हैं, उनके पास अप्रशिक्षित कम्पोजीटर्स होते हैं और वे अनेक त्रुटियाँ कर देते हैं, सस्ती जिल्द कराते हैं और अनेक अन्य बुराइयों के कारण पुस्तकों का वे स्तर गिरा देते हैं।

कुछ सुझाव (Some Suggestions)

यदि उन उद्देश्यों को प्राप्त करना है, जिनके लिए पाठ्य-पुस्तकें लिखी जाती हैं तो यह आवश्यक है कि पाठ्य-पुस्तकों के स्तर में सुधार किया जाए। पाठ्य-पुस्तकों के सुधार के लिए निम्नांकित कदम उठाए जा सकते हैं—

(i) पाठ्य-पुस्तकों के सुधार हेतु राष्ट्रीय स्तर पर एक उच्च सत्ताधारी पाठ्य-पुस्तक समिति का निर्माण किया जाए।

(ii) पुस्तकें राष्ट्रीय स्तर पर लिखी जाएँ। राज्य स्तर पर लिखी गई पुस्तकों को प्रोत्साहित न किया जाए।

(iii) राज्य की तरफ से पाठ्य-पुस्तकों के फॉर्मेट हेतु एक निश्चित स्तर निर्धारित कर दिया जाए।

(iv) पाठ्य-पुस्तकों में चित्रादि बनाने हेतु चित्रण-कला का विकास किया जाए। इसके लिए एक पृथक् संस्था का निर्माण किया जाए।

(v) पाठ्य-पुस्तकों को जल्दी-जल्दी बदलने की प्रवृत्ति रोकी जाए।

(vi) एक विषय के लिए एक पुस्तक न बनाकर, अच्छे स्तर की कई पुस्तकों की सिफारिश की जाए।

(vii) लेखक को पुस्तक-लेखन का कार्य सरकार की अनुमति के बिना न करना चहिए। साथ ही, सरकार लेखन का अधिकार योग्य एवं अनुभवी अध्यापकों को ही दे।

(viii) पुस्तकें राष्ट्रीय भावना से भरी हुई हों। वे किसी की धार्मिक भावनाओं को ठेस न पहुँचाए।

(ix) प्रकाशक को पुस्तकों के मूल्य पर नियन्त्रण रखना चाहिए।

(x) सरकार को पुस्तकों के मूल्य पर नियन्त्रण रखना चाहिए।

(xi) सस्ती पुस्तकों को हतोत्साहित किय जाए।

(xii) प्रकाशित होने से पूर्व पांडुलिपि का विद्वानों की एक विशिष्ट समिति द्वारा अध्ययन किया जाए और उनकी सिफारिशों के आधार पर ही वह पुस्तक प्रकाशित हो सके, ऐसी व्यवस्था कर दी जाए।

अभ्यास प्रश्न

❖ निबन्धात्मक प्रश्न

1. नागरिकशास्त्र शिक्षण में पाठ्य-पुस्तक के महत्त्व का वर्णन करो।
2. जूनियर हाई स्कूल कक्षाओं के लिए पाठ्य-पुस्तक का चयन करते समय आप किन तथ्यों को ध्यान में रखेंगे ?
3. पाठ्य-पुस्तकों का चुनाव किस आधार पर होना चाहिए ? कक्षा 9 तथा 10 की पाठ्य-पुस्तकों का मूल्यांकन करते हुए उचित सुझाव दीजिए।
4. जूनियर हाई स्कूल कक्षाओं के लिए नागरिकशास्त्र की पाठ्य-पुस्तक का चयन करते समय किन सिद्धान्तों को ध्यान में रखना चाहिए ? इन कक्षाओं में किसी भी कक्षा के लिए प्रस्तावित की गई पाठ्य-पुस्तक का मूल्यांकन कीजिए।
5. नागरिकशास्त्र की अच्छी पाठ्य-पुस्तक में कौन-कौन-से गुण होने चाहिए ?
6. नागरिकशास्त्र की पाठ्य-पुस्तक की आवश्यकता एवं महत्त्व का उल्लेख कीजिए।
7. नागरिकशास्त्र की पाठ्य-पुस्तक के मूल्यांकन हेतु मापदण्ड कसौटी का उल्लेख कीजिए।
8. नागरिकशास्त्र की पाठ्य-पुस्तकों के सामान्य दोषों का उल्लेख कीजिए।

❖ लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पाठ्य-पुस्तक की किन्हीं दो आवश्यकताओं को संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।
2. पाठ्य-पुस्तक के महत्त्व की संक्षेप में विवेचना कीजिए।
3. पाठ्य-पुस्तक के प्रमुख गुणों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

❖ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न :

1. छात्र पाठ्य-पुस्तकों का उपयोग करते हैं—
   (a) परिपाक में (b) अध्ययन में
   (c) सीखने के अनुभव में (d) इन सभी में
2. पाठ्य-पुस्तकों का प्रमुख दोष है—
   (a) एकाग्रता का (b) पुनर्बलन का
   (c) मनोवैज्ञानिक क्रम का (d) इन सभी का
3. पाठ्य-पुस्तकों का उपयोग करते हैं—
   (a) छात्र (b) अध्यापक
   (c) (a) तथा (b) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं
4. अध्यापक पाठ्य-पुस्तकों का उपयोग करता है—
   (a) अध्ययन में (b) पाठ-योजना में
   (c) कक्षा-अनुदेशन में (d) इन सभी में
5. पाठ्य-पुस्तक का चयन करते समय किस बात पर ध्यान देना चाहिए ?
   (a) मूल्य (b) प्रस्तुतीकरण
   (c) संगठन (d) ये सभी

6. "पाठ्य-पुस्तक कक्षा-कक्ष में प्रयोग हेतु निर्धारित की गई पुस्तक है।" किसने कहा ?
   (a) जॉन डीवी
   (b) हरबर्ट स्पेन्सर
   (c) बेकन
   (d) टी०पी० नन

7. पाठ्य-पुस्तक से–
   (a) समय की बचत होती है
   (b) स्वाध्ययन में सहायता प्राप्त होती है
   (c) व्यवस्था तथा क्रमबद्धता में सहायता मिलती है
   (d) उपर्युक्त सभी

8. एक अच्छी पाठ्य-पुस्तक में गुण होने चाहिए–
   (a) कागज एवं मुद्रण उपयुक्त
   (b) मूल्य उपयुक्त
   (c) प्रस्तुतीकरण उपयुक्त
   (d) ये सभी

उत्तर : **1.** (a), **2.** (d), **3.** (c), **4.** (d), **5.** (d), **6.** (c), **7.** (d), **8.** (d).

❖❖❖❖❖